Raga of the Month June 2024 Raga LalitBilas राग ललित बिलास

राग ललित बिलास पंडित वि. रा. आठवलेजी का सृजन है। पंडित आठवलेजी के "नादवैभव" इस किताब में राग की जानकारी दी है। इस राग की कल्पना पंडित आठवलेजी को मूर्च्छना तत्व के आधार पर आयी ऐसा किताब में वर्णन किया है। मूल राग काफी की धैवत की मूर्च्छना से (मतलब काफी रागके धैवत को षड्ज मानकर) इस राग का स्वरूप हमें मिलता है। इस राग में ललित और बिलासखानी तोड़ी इन रागों का मिश्रण हम देख सकते हैं। (कर्नाटक संगीत में इस राग का वर्गीकरण पंचम-वर्ज्य द्वि-मध्यम रागोंमे किया है और उसका नाम हनुमश्री बताया है।)

अब हम काफी राग की मूर्च्छनाओं का अभ्यास करेंगे।

Scale	S सा	r रे	R रे	g ग	G ग	M म	m मं	P प	d ध	D ध	n नि	N नि	S सा	r रे	R रे	g ग	G ग	M म	m मं	P प	d ध	D ध	n नि	N नि	मूर्च्छना प्रक्रियासे बननेवाले राग
काफी	सा		रे	ग		म		प		ध	नि		सा		रे	ग		म		प		ध	नि		
मूर्च्छना 1			सा	रे		ग		म		प	ध		नि												भैरवी
मूर्च्छना 2				सा		रे		ग		मं	प		ध		नि										यमन
मूर्च्छना 3						सा		रे		ग	म		प		ध	नि									झिंझोटी - खमाज थाट
मूर्च्छना 4								सा		रे	ग		म		प	ध		नि							आसावरी
मूर्च्छना 5										सा	रे		ग		म	मं		ध		नि					ललितबिलास
मूर्च्छना 6											सा		रे		ग	म		प		ध		नि			बिलावल

(संदर्भ - oceanofragas.com/ Raga Search/ Murchana Finder Table submenu की मददसे आप किसी भी रागकी सारी मूर्छना और उनसे कौनसे राग निकलते हैं यह देख सकते हैं।)

[ऊपर दिए हुए टेबल से हमें पता चलता हैं की ललितबिलास छोड़के सारे राग पारंपारिक हैं। हम ऐसा भी कह सकते हैं की काफी रागकी धैवतकी मूर्च्छना में किसी विद्वान को राग स्वरुप मिला नहीं था। इसी मूर्छना में रंजक राग स्वरूप निर्माण करना यह पंडित वि. रा. आठवले जी की उच्च कोटीकी संगीत प्रतिभा का (Musicianship) निदर्शक है।]

इस राग में रिषभ, गंधार, धैवत और निषाद स्वर कोमल हैं, और दोनों मध्यम लगते हैं; पंचम वर्जित है।

राग का विस्तार - सा, रे ग रे सा ,रे नि ध , नि ध , ध सा, सा रे ग, रे ग म, म, मं ध मं म, रे ग रे सा; म, मं ध सां, सां रें गं रें सां, रें नि ध , मं ध मं म, रे ग रे सा.

आज के ऑडियो में हम पंडित वि. रा. आठवलेजी की गायी हुई "तुम हो गुण निधान" यह बंदिश सुनेंगे।

पंडित वि. रा. आठवलेजी का अल्प परिचय (1918- 2011)

उनका जन्म महाराष्ट्र में भोर में हुआ। उनके पिता अहमदाबाद में रहते थे। उनका संगीत का प्रारंभिक शिक्षण उनके पिताजी से हुआ। उसके बाद उन्होंने अहमदाबाद में पंडित ना. मो. खरेजी ने स्थापन किए हुए गांधर्व महाविद्यालय में शिक्षा प्राप्त की। वहां पर पंडित शंकर राव व्यास, पंडित नारायण राव व्यास, मास्टर नवरंग नागपुरकर ऐसे विद्वान गुरुओं से संगीत की शिक्षा प्राप्त की। बैचलर ऑफ़ सायन्स पदवी संपादन करने के बाद उन्होंने पुणे में पंडित विनायक राव पटवर्धन जी से शिक्षा प्राप्त की। इस समय उनको पंडित रामकृष्णबुवा वझेजीसे भी सीखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उसके बाद में उन्होंने ऑल इंडिया रेडियो के विभिन्न केंद्रोंपर विविध पदों पर नौकरी की। इसी कालमे उन्होंने आगरा घराने के उस्ताद विलायत हुसेन खाँ का गंडाबंध शागीर्द बनकर उनसे ४ बरस आगरा घरानेके गायकीकी तालीम ली। उन्हें अन्य बुजुर्ग गायकों से जैसे उस्ताद फैयाझ खाँ , पंडित सुरेश बाबू माने, पंडिता अंजनीबाई मालपेकरजी, पंडित गजाननबुवा जोशीजी से मार्गदर्शन लेनेका सौभाग्य मिला। आकाशवाणी से निवृत होने के बाद उन्होंने एस एन डी टी विद्यापीठ तथा गांधर्व महाविद्यालय और गोवा कला अकादमी में संगीत अध्यापन किया। वाशी में गंधर्व महाविद्यालय की स्थापना उन्होंने की। उन्होंने कई नए रागों का सृजन किया है। तथा "नादपिया" इस उपनाम से अनेक बंदिशों की रचना की है। उनके प्रमुख शिष्यों में पंडित जे व्ही भातखंडे, लीना हर्डीकर , संध्या काथवटे, निशा पारसनीस आदि शिष्य हैं।

संदर्भ : "नादवैभव"; राग प्रवाहम् – Dr. M.N. Dhandapani & D. Pattammal

आभार : पंडित यशवंतबुवा महाले , पंडित विजय बक्षी

01-06-2024

योगायोग की बात है की इसी राग स्वरूप का वर्णन और एक बंदिश पंडित रामाश्रय झाजी ने अपने किताब "अभिनव गीतांजली " के पाँचवे खंड में राग श्री वल्लभ नामसे किया है। यह लेख देखने के बाद पुणे के पंडित विजय बक्षीजी ने यह जानकारी साझा की ।

Link to the list of 160+ "Raga of the month" articles

@ Archive of ROTM Articles - https://oceanofragas.com/Raga_Of_Month_Alphabetically.aspx